सच्चा शृंगार

वह कौन-सी चीज़ है जिसे देने वाला गरीब नहीं होता पर पाने वाला ज़रूर मालामाल बन जाता है? वह कौन-सी चीज़ है जो मामूली चेहरे को खास बना देती है? वह कौन-सी चीज़ है जिसमें परायों को अपना बनाने की अद्भुत क्षमता है? मनन-चिंतन करने पर पाएंगे कि उपरोक्त तीनों प्रश्नों का एक ही उत्तर है – 'मुस्कान भरा चेहरा'। कई लोगों को सामने से आता देखते ही उनसे बातें करने को जी चाहता है, स्वयं का दु:ख-दर्द भूल जाता है, शांति प्राप्त हो जाती है। आखिर कौन-सी चुंबकीय शक्ति है उनके पास जो वो सबको अच्छे लगते हैं। वो शक्ति है उनके चेहरे की मुस्कान! कहने में आता है –

सूर्यमुखी दिन में खिलता है,
रात में नहीं
चंद्रमुखी रात में खिलता है,
प्रभात में नहीं
किंतु अंतर्मुखी तो
हर क्षण खिलता है
क्योंकि उसकी मुस्कान
किसी आधार पर नहीं

जीवन में जिसने खुशी का स्वाद चखा है वास्तव में वही मानव धन्य है, उसने जीवन जीने की कला को सीख लिया है और उसे ही जीने का अधिकार भी है। खुशियाँ बाँटने का आसान तरीका है मुस्कान। मुस्कराहट इंसान के व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देती है। मुस्कान इंसान की ऊपरी सतह को भेदकर अंदर दिल तक पहुँचने की क्षमता रखती है। जिस चेहरे पर मुस्कराहट आती है, वह खास बन जाता है। मुस्कान में वो शक्ति है जो दिल में अपनेपन की भावना पैदा कर देती है।

एक शिक्षक ने अंकुर और सुरेश को गुलाब के कुछ फूल देकर कहा – बाज़ार का एक चक्कर लगाकर आओ, जो भी व्यक्ति तुम्हें देखकर मुस्कराए उसे ही एक फूल दे देना। दोनों चले गये। थोड़ी देर बाद दोनों जब वापस आये तो देखा कि अंकुर के हाथ खाली थे और सुरेश के हाथों में सभी फूल वैसे के वैसे ही थे। सुरेश ने शिक्षक से शिकायत की – मास्टर जी, कोई भी मिलने वाला मुझे देखकर नहीं मुस्कराया और इसलिए सारे फूल वापस ले आया हूँ। तभी अंकुर बोला – मास्टर जी, मुझे देखकर तो सारे ही लोग मुस्कराए और इसलिए मेरे सारे फूल बँट गये। मास्टर जी बहुत हैरान हुए। उन्होंने अंकुर से पूछा – बेटे, तुम्हें देखकर सब लोग क्यों मुस्कराये? अंकुर ने जवाब दिया – मास्टर जी, हर किसी को देखकर, पहले मैं मुस्कराता था इसलिए हरेक मुझे भी देखकर मुस्कराया और फूल हाथ में देते ही मुझसे हमेशा के लिये दोस्ती निभाने का वायदा करके गया। मुझे चाहने वालों की भीड़ लग गई और फूल भी कम पड़ गये। क्या इन्हीं अलौकिक नज़ारों में आप भी घुलमिल कर रहना चाहते हो? दु:खों की दुनिया से दूर कहीं एक तरफ मुस्कराते नयनों से घुलमिल कर आत्मिक आनन्द की प्राप्ति करना चाहते हो? कहा गया है –

आँखों में अगर मुस्कान है तो
इंसान तुमसे दूर नहीं
पंखों में यदि उड़ान है तो
आसमान तुमसे दूर नहीं

इसके लिये पहले स्वयं को आगे आना होगा। पहले 'मैं' करूँ। खुद करूँ, खुद पाऊँ। पहले मैं बनूँ। राज़ की बात यही है कि अगर आप चाहते हैं कि सभी आपको देखकर मुस्करायें, आपके सामने दोस्ती का हाथ बढ़ायें, आपके ऊपर करुणा की मेहर बरसायें, तो पहले आप खुद मुस्करायें। मुस्कराहट से, कठिन काम भी आसान हो जाते हैं। जीवन-शैली बदल जाने से

शरीर की रौनक भी बढ़ जाती है। मुस्कान किसी भी भाषा की, धर्म की अथवा जाति की मोहताज नहीं। मुस्कान सूरज की वह किरण है जो इंसान के मन पर छाये दु:खों के बादल पलभर में गायब कर देती है। तो फिर देर किस बात की! मन में खुशी का अनुभव करें और मीठी-प्यारी मुस्कान से अपने चेहरे का सच्चा शृंगार करें।

स्थाई मुस्कान आए कैसे?

मुस्कान है तो उत्तम नेमत पर यह आए कैसे? मुस्कान न तो पेड़ों पर लगती है, न खदानों से निकाली जा सकती है, यह तो भीतर की ओर जाकर स्वयं का साक्षात्कार करने से प्रकट होती है। **स्वयं को जानकर ही हम खुशियों के सागर परमात्मा को जान सकते हैं और उनसे अविनाशी मुस्कान का तोहफा पा सकते हैं। सभी देवियों और देवताओं के चेहरों पर बिखरी रहने वाली मधुर मुस्कान उनके आत्म-ज्ञान और ईश्वरीय ज्ञान का ही प्रतिफल (प्रालब्ध) है।** जब हम जान जाते हैं कि मैं देह से न्यारी आत्मा हूँ, सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाने आई हूँ, संसार रंगमंच पर अन्य आत्माएँ भी अपना-अपना पार्ट बजा रही हैं, परमात्मा पिता इस रंगमंच के निर्देशक हैं, हमें पार्ट प्ले कर वापस उन्हीं के पास लौट जाना है, तो हम हर घटना के प्रति साक्षीभाव धारण कर लेते हैं। यह क्यों, क्या, कैसे, कब, कितना – इन सभी प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं। मुस्कान को तिरोहित करने वाले सारे कारण मिट जाते हैं तो मुस्कान स्थाई हो जाती है। अत: आध्यात्मिक ज्ञान ही सच्ची मुस्कान का स्थाई आधार है।

❑